नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव आल इन वन पूर्णत: नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है।

संजीव®

आल इन वन

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए
पूर्णत: नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

1. अंग्रेजी
2. हिन्दी
3. संस्कृत
4. विज्ञान
5. गणित
6. सामाजिक विज्ञान

कक्षा 9

मूल्य ₹ 900

संजीव प्रकाशन, जयपुर
Visit us at : www.sanjivprakashan.com

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

English—Class 9

Time : 3.15 Hours **Marks : 100**

Area of Learning	Marks
Reading	20
Writing	18
Grammar	12
Text Book : **Beehive**	35
Supp. Book : **Moments**	15

1. Reading **20 Marks**

Two unseen passages for comprehension in about 400 words for both : 10×2

Passage 1—(around 200 words) 10 Multiple Choice Questions including 2 questions on vocabulary—One testing the knowledge of similar word and the other testing the knowledge of opposite word.

Passage 2—(around 200 words) 10 Very Short Answer Type comprehension questions including questions on lexical items.

(Besides comprehension question, lexical items should also be tested)

2. Writing **18 Marks**

(i) Letter Writing — (One out of two)
Informal — Personal, such as to family and friends.
Formal — Letters to the editor/the Principal of a school.
Email — Formal letters to the Principal of the school or to the editor of a Newspaper or Magazine. 06

(ii) Short Paragraph — Speech or debate type, based on outline one out of two (Limit : 80 to 100 words) 06

(iii) Short writing task in the form of dialogue or story on the basis of hints. (Limit : 80 to 100 words) 06

3. Grammar **12 Marks**

(i) Tenses 04
(ii) Relative Pronouns 02
(iii) Determiners 03
(iv) Prepositions 03

4. Textbook & Supplementary Reader **35+15=50 Marks**

Prose—Beehive **22 Marks**

(i) One passage from the text book for comprehension (limit : 200 words) 08

(Besides comprehension question, lexical items should also be tested)

(ii) Three short answer type questions (out of four, around 20-30 words each) 06

(iii) One long answer type questions (out of two, around 80 words) 05

(iv) One out of two questions on drama text (local and global comprehension question) in about 40 words. 03

Poetry—Beehive **13 Marks**

(i) One out of two extracts—based on poetry from the text to test comprehension and appreciation. (two questions) 04

(ii) Two out of three short answer type questions on interpretation of themes and ideas of the prescribed poems. (around 20-30 words each) 04

(iii) One out of two long answer type question on interpretation of themes and ideas contained in the poems. (around 80 words) 05

Supplementary Reader—Moments **15 Marks**

(i) One out of two long answer type questions regarding character, plot or situations occurring in the lessons. (around 80 words) 05

(ii) Two out of four short answer type questions. (around 60 words) 06

(iii) Four Multiple choice questions testing factual aspects of the lesson. 04

Prescribed Books :

1. **Beehive**—NCERT's Book Published under Copyright
2. **Moments**—NCERT's Book Published under Copyright

हिन्दी—कक्षा 9

समय : 3.15 घंटे पूर्णांक : 100

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	15
रचना	15
व्यावहारिक व्याकरण	15
पाठ्यपुस्तक : क्षितिज (भाग-1)	40
पूरक-पुस्तक : कृतिका (भाग-1)	15

1. **अपठित बोध :** **15 अंक**

अपठित गद्यांश (आठ बहुचयनात्मक प्रश्न) 08

अपठित काव्यांश (सात बहुचयनात्मक प्रश्न) 07

2. रचना : **15 अंक**

(i) संकेत बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध-लेखन (विकल्प सहित) 06

(ii) संवाद-लेखन/पत्र-लेखन (विकल्प सहित) 05

(iii) प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लेखन (100 शब्द) 04

3. व्यावहारिक-व्याकरण : **15 अंक**

(8 रिक्त स्थान पूर्ति, तीन अतिलघूत्तरात्मक एवं दो लघूत्तरात्मक प्रश्न)

(i) शब्द निर्माण (उपसर्ग-प्रत्यय), विशेषण, लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव 03

(ii) परसर्ग या कारक 'ने' का क्रिया पर प्रभाव 03

(iii) वाक्य-रचना (सरल और संयुक्त वाक्य) 03

(iv) पर्यायवाची, विलोम, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 03

(v) मुहावरे 03

4. पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पुस्तक : **(40+15) 55 अंक**

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-1) **40 अंक**

(i) निर्धारित गद्य-पाठों से किन्हीं दो गद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी छः प्रश्न 06

(ii) निर्धारित कविताओं से किन्हीं दो पद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी छः प्रश्न 06

(iii) 6 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 3 पद्य भाग से) 06

(iv) 5 लघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 2 पद्य भाग से) 10

(v) 1 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (गद्य एवं पद्य में विकल्प के साथ) 03

(vi) किसी एक रचनाकार का परिचय (कवि अथवा लेखक के विकल्प के साथ) 04

(vii) 1 निबन्धात्मक प्रश्न (गद्य एवं पद्य में विकल्प के साथ) 05

पूरक-पुस्तक (कृतिका भाग-1) **15 अंक**

(i) अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 03

(ii) 2 लघूत्तरात्मक प्रश्न 04

(iii) 1 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) 03

(iv) 1 निबन्धात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) 05

निर्धारित पुस्तकें :

1. क्षितिज — भाग 1 — एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

2. कृतिका — भाग 1 — एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

संस्कृत—कक्षा 9

परीक्षा	समय (घंटे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	पूर्णांक
सैद्धान्तिक	3.15 होरा:	100	100

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	अंकभार
1.	अपठितावबोधनम्	15
2.	रचनात्मकम् कार्यम्	25
3.	व्याकरणम्	25
4.	पठितावबोधनम् (शेमुषी प्रथमो भाग:)	35
	कुल	100

पुस्तक का नाम : शेमुषी प्रथमो भाग:

इकाई संख्या	विषयवस्तु	अंकभार
1. अपठितावबोधनम्		10 + 5 = 15
	(क) 80-100 शब्द परिमित: सरल अपठित गद्यांश:	
	(i) शीर्षक दानम्	01
	(ii) एकपदेन उत्तरम्	½ × 4 = 02
	(iii) पूर्णवाक्येन उत्तरम्	1 × 3 = 03
	(iv) अनुच्छेदाधारितं भाषिक कार्यम्	1 × 4 = 04
	(ख) 40-50 शब्द परिमित: सरल अपठित गद्यांश:	
	(i) एकपदेन उत्तरम्	½ × 2 = 01
	(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरम्	1 × 2 = 02
	(iii) अनुच्छेदाधारितं भाषिक कार्यम्	1 × 2 = 02
	भाषिक कार्यम् इत्येनम् अभिप्रेतम् अस्ति	
	(i) वाक्ये कर्तृ-क्रिया पदचयनम्	
	(ii) कर्तृ क्रिया अन्विति:	
	(iii) विशेषण विशेष्य: अन्विति:	
	(iv) संज्ञास्थाने सर्वनामप्रयोग: अथवा सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोग:	
	(v) पर्यायं विलोमं वा पदं दत्त्वा अनुच्छेदे दत्तं पदचयनम्	
2. रचनात्मकं कार्यम्		25
	(i) संकेताधारित अभिनन्दनपत्रम्/वर्धापनपत्रम्/ निमन्त्रणपत्रम्/प्राचार्यं प्रति प्रार्थना-पत्रम्	5

	(ii) संकेताधारित: वार्तालाप: अथवा अनुच्छेदलेखनम्	5
	(iii) संकेताधारितं चित्रवर्णनम्	5
	(iv) कथाक्रम संयोजनम् (क्रमरहितानाम् अष्टवाक्यानां क्रमपूर्वक संयोजनम्)	04
	(v) अनुवाद कार्यम्-हिन्दीभाषाया: अष्टवाक्येषु षड्वाक्यानां संस्कृते अनुवाद:	06
3. व्याकरणम्	बहुविकल्पात्मकप्रश्ना:, रिक्तस्थानपूर्ति:, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्ना:, लघूत्तरात्मक प्रश्ना: च	25
	(i) वाक्येषु अनुच्छेदे वा सन्धिकार्यम् (सन्धि, सन्धि विच्छेद:) (क) स्वरसन्धि: दीर्घ:, गुण:, वृद्धि:, यण्	2
	(ख) विसर्ग सन्धि—विसर्गस्य उत्त्वं, रुत्वं, लोप:, विसर्गस्थाने (श् ष् स्)	2
	(ii) समास ज्ञानम्—तत्पुरुष:, द्विगु:, बहुव्रीहि:, समासानाम् सामासिक पद निर्माणम्, समासविग्रहं च	3
	(iii) कारकम्—उपपदविभक्तीनाम् प्रयोगा:, अनुच्छेदे, वाक्येषु वा द्वितीयात: सप्तमी— विभक्तिपर्यन्तम् सामान्य परिचय:	3
	(iv) प्रत्यया:—तुमुन्, क्त्वा, ल्यप्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, टाप्, तमप्, तरप्	3
	(v) धातु रूपाणि:—लट्, लोट्, लृट्, लङ्, विधिलिङ्लकारेषु परस्मैपदिन:—भू, पठ्, हस्, नम्। गम् (गच्छ्), अस्, हन्, क्रुध्, नश्, नृत्, इष्, पृच्छ्, कृ, ज्ञा, भक्ष्, चिन्त्, इत्यादय:। आत्मनेपदिन:—सेव्, लभ्, रुच्, मुद्, याच् (केवलं लट्लकारे) उभयपदिन:—नी, ह्व, (हर्) भज्, पच्।	3
	(vi) शब्दरूपाणि पुल्लिङ्ग: अजन्ता: — अकारान्ता: (बालकवत्) इकारान्ता: (कविवत्) उकारान्ता: (साधुवत्) ऋकारान्ता: (पितृ, धातृवत्) हलन्ता:-राजन्, भवत् आत्मन्, विद्वस्, गच्छत्	3

	स्त्रीलिङ्ग: अजन्ता: — आकारान्ता: (रमावत्) इकारान्ता: (मतिवत्) ईकारान्ता: (नदीवत्) ऋकारान्ता: (मातृवत्) नपुंसकलिङ्ग: अजन्ता:— अकारान्ता: (फलवत्) उकारान्ता: (मधुवत्)	
	(vii) संख्यावाचक शब्दा: एक, द्वि, त्रि, चतुर्, पञ्चन्	2
	(viii) सर्वनाम शब्दा: (क) यत्, तत्, किम्, इदम्, (त्रिषु लिङ्गेषु) (ख) अस्मद्, युष्मद्	2
	(ix) उपसर्गा:- सामान्यपरिचय:	2
4. पठितावबोधनम्—(शेमुषी प्रथमो भाग:)		**35**
	(i) पाठ्यपुस्तकात् बहुचयनात्मक प्रश्ना:	1 × 7 = 7
	(ii) पाठ्यपुस्तकात् अंशद्वयम्—(एक: गद्यांश:, एक: पद्यांश:) (क) एकपदेन उत्तरम् ½ × 2 = 1 (ख) पूर्णवाक्येन् 1 × 2 = 2 (ग) भाषिककार्यम् 1 × 2 = 2	5 + 5 = 10
	(iii) पाठ्यपुस्तकात्—पद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् सप्रसङ्गम् भावार्थलेखनम्	3
	(iv) पाठ्यपुस्तकात् एकस्य गद्य पाठस्य हिन्दी भाषायां सार-लेखनम् (द्वयो: एकस्य)	4
	(v) प्रश्ननिर्माणम् (चत्वार:)	1 × 4 = 4
	(vi) एकस्य पद्यस्य अन्वयलेखनम्	2
	(vii) पाठ्यपुस्तकात् श्लोकद्वयलेखनम्	3
	(viii) शब्दार्थलेखनम् (चतुर्णाम्)	½ × 4 = 2

निर्धारित पुस्तक — शेमुषी प्रथमो भाग:

विज्ञान—कक्षा 9

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

परीक्षा	समय (घंटे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	पूर्णांक
सैद्धान्तिक	3.15	100	100

इकाई संख्या	अध्याय संख्या	शीर्षक एवं विषय वस्तु	अंक
1. द्रव्य–प्रकृति एवं व्यवहार	1. हमारे आसपास के पदार्थ	1.1 पदार्थ का भौतिक स्वरूप 1.2 पदार्थ के कणों के अभिला–क्षणिक गुण 1.3 पदार्थ की अवस्थाएँ? 1.4 क्या पदार्थ अपनी अवस्था को बदल सकता है? 1.5 वाष्पीकरण	07
	2. क्या हमारे आस–पास के पदार्थ शुद्ध हैं?	2.1 मिश्रण क्या है? 2.2 विलयन क्या है? 2.3 भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन 2.4 शुद्ध पदार्थों के क्या प्रकार हैं?	06
	3. परमाणु एवं अणु	3.1 रासायनिक संयोजन के नियम 3.2 परमाणु क्या है? 3.3 अणु क्या है? 3.4 रासायनिक सूत्र लिखना 3.5 आण्विक द्रव्यमान	09
	4. परमाणु संरचना	4.1 पदार्थों में आवेशित कण 4.2 परमाणु की संरचना 4.3 विभिन्न कक्षाओं में इलेक्ट्रॉन कैसे वितरित होते हैं? 4.4 संयोजकता 4.5 परमाणु संख्या तथा द्रव्यमान संख्या 4.6 समस्थानिक	08
2. सजीव जगत में संगठन	5. जीवन की मौलिक इकाई	5.1 सजीव किससे बने होते हैं? 5.2 कोशिका किससे बनी होती है? कोशिका का संरचनात्मक संगठन क्या है?	12
	6. ऊतक	6.1 क्या पौधे और जन्तु एक ही तरह के ऊतकों से बने होते हैं? 6.2 पादप ऊतक 6.3 जन्तु ऊतक	14

3. गति, बल तथा कार्य	7. गति	7.1 गति का वर्णन 7.2 गति की दर का मापन 7.3 वेग में परिवर्तन की दर 7.4 गति का ग्राफीय प्रदर्शन 7.5 ग्राफीय विधि से गति के समीकरण 7.6 एक समान वृत्तीय गति	09
	8. बल तथा गति के नियम	8.1 सन्तुलित और असन्तुलित बल 8.2 गति का प्रथम नियम 8.3 जड़त्व तथा द्रव्यमान 8.4 गति का द्वितीय नियम 8.5 गति का तृतीय नियम	07
	9. गुरुत्वाकर्षण	9.1 गुरुत्वाकर्षण 9.2 मुक्त पतन 9.3 द्रव्यमान 9.4 भार 9.5 प्रणोद तथा दाब 9.6 आर्किमीडीज का सिद्धान्त	06
	10. कार्य तथा ऊर्जा	10.1 कार्य 10.2 ऊर्जा 10.3 कार्य करने की दर	06
	11. ध्वनि	11.1 ध्वनि का उत्पादन 11.2 ध्वनि का संचरण 11.3 ध्वनि का परावर्तन 11.4 श्रव्यता का परिसर 11.5 पराध्वनि के अनुप्रयोग	08
4. भोजन	12. खाद्य संसाधनों में सुधार	12.1 फसल उत्पादन में उन्नति 12.2 पशु पालन	08

निर्धारित पुस्तक :

1. विज्ञान—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित।

गणित—कक्षा 9

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न-पत्र	समय (घंटे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक
एक पत्र	3.15	100

इकाई-1	**संख्या पद्धति अंक** **1. संख्या पद्धति** अपरिमेय संख्याएँ, वास्तविक संख्याएँ और उनके दशमलव प्रसार, वास्तविक संख्याओं पर संक्रियाएँ, वास्तविक संख्याओं के लिए घातांक नियम
इकाई-2	**बीज गणित** **2. बहुपद** एक चर वाले बहुपद, बहुपद के शून्यक, बहुपदों का गुणनखण्डन, बीजीय सर्वसमिकाएँ। **4. दो चरों वाले रैखिक समीकरण** रैखिक समीकरण, रैखिक समीकरण का हल
इकाई-3	**निर्देशांक पद्धति** **3. निर्देशांक ज्यामिति** कार्तीय पद्धति, तल में एक बिन्दु आलेखित करना जबकि इसके निर्देशांक दिए हुए हों।
इकाई-4	**ज्यामिति** **5. यूक्लिड की ज्यामिति का परिचय** यूक्लिड की परिभाषाएँ, अभिगृहित और परिभाषाएँ **6. रेखाएँ और कोण** आधारभूत पद और परिभाषाएँ, प्रतिछेदी रेखाएँ और अप्रतिछेदी रेखाएँ, कोणों के युग्म, एक ही रेखा के समान्तर रेखाएँ। **7. त्रिभुज** त्रिभुजों की सर्वांगसमता, त्रिभुजों की सर्वांगसमता के लिए कसौटियाँ, एक त्रिभुज के कुछ गुण, त्रिभुजों की सर्वांगसमता के लिए कुछ और कसौटियाँ। **8. चतुर्भुज** समान्तर चतुर्भुज के गुण, मध्य बिन्दु प्रमेय **9. वृत्त** जीवा द्वारा एक बिन्दु पर अंतरित कोण, केन्द्र से जीवा पर लम्ब, समान जीवाएँ और उनकी केन्द्र से दूरियाँ, एक वृत्त के चाप द्वारा अंतरित कोण, चक्रीय चतुर्भुज

इकाई-5	**मेन्सुरेशन** **10. हीरोन का सूत्र** त्रिभुज का क्षेत्रफल—हीरोन के सूत्र द्वारा **11. पृष्ठीय क्षेत्रफल और आयतन** एक लम्बवृत्तीय शंकु का पृष्ठीय क्षेत्रफल, गोले का पृष्ठीय क्षेत्रफल, लम्ब-वृत्तीय शंकु का आयतन, गोले का आयतन
इकाई-6	**सांख्यिकी** **12. सांख्यिकी** आँकड़ों का आलेखीय निरूपण

सामाजिक विज्ञान—कक्षा 9

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न-पत्र	समय (घण्टे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	पूर्णांक
सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र-एक	3.15	100	100

पुस्तक का नाम—भारत और समकालीन विश्व—I (इतिहास)

खण्ड : 1	**घटनाएँ और प्रक्रियाएँ।**	
अध्याय-1	**फ्रांसीसी क्रान्ति** अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में फ्रांसीसी समाज। क्रान्ति की शुरुआत। फ्रांस में राजतन्त्र का उन्मूलन और गणतन्त्र की स्थापना। क्या महिलाओं के लिए भी क्रान्ति हुई? दास-प्रथा का उन्मूलन। क्रान्ति और रोजाना की जिन्दगी।	06
अध्याय-2	**यूरोप में समाजवाद और रूसी क्रान्ति** सामाजिक परिवर्तन का युग। रूसी क्रान्ति। पेत्रोगाद में फरवरी क्रान्ति। अक्टूबर के बाद क्या बदला? रूसी क्रान्ति और सोवियत संघ का वैश्विक प्रभाव।	07

अध्याय-3	**नात्सीवाद और हिटलर का उदय** वाहमर गणराज्य का जन्म। हिटलर का उदय। नात्सियों का विश्व दृष्टिकोण। नात्सी जर्मनी में युवाओं की स्थिति। आम जनता और मानवता के खिलाफ अपराध।	06
खण्ड-2	**जीविका, अर्थव्यवस्था और समाज**	
अध्याय-4	**वन्य समाज और उपनिवेशवाद** वनों का विनाश क्यों? व्यावसायिक वानिकी की शुरुआत। वन विद्रोह। जावा के जंगलों में हुए बदलाव।	04
अध्याय-5	**आधुनिक विश्व के चरवाहे** घुमन्तु चरवाहे और उनकी आवाजाही। उपनिवेशिक शासन और चरवाहों का जीवन। अफ्रीका में चरवाह जीवन।	04
	पुस्तक का नाम—समकालीन भारत–I (भूगोल)	
अध्याय-1	**भारत—आकार और स्थिति**	03
अध्याय-2	**भारत का भौतिक स्वरूप**	05
अध्याय-3	**अपवाह**	04
अध्याय-4	**जलवायु**	05
अध्याय-5	**प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणी**	05
अध्याय-6	**जनसंख्या**	05
	पुस्तक का नाम—लोकतान्त्रिक राजनीति–I (राजनीति विज्ञान)	
अध्याय-1	**लोकतन्त्र क्या है? लोकतन्त्र क्यों?** लोकतन्त्र, लोकतन्त्र की विशेषताएँ, लोकतन्त्र का वृहद्तर अर्थ।	05
अध्याय-2	**संविधान निर्माण** दक्षिण अफ्रीका में लोकतान्त्रिक संविधान, संविधान की जरूरत। भारतीय संविधान का निर्माण, भारतीय संविधान के बुनियादी मूल्य।	06
अध्याय-3	**चुनावी राजनीति** चुनाव, भारत में चुनाव प्रणाली, भारत लोकतान्त्रिक चुनाव।	06

अध्याय-4	**संस्थाओं का कामकाज** प्रमुख नीतिगत फैसले लेने की प्रक्रिया, संसद, राजनैतिक कार्यपालिका, न्यायपालिका।	05
अध्याय-5	**लोकतान्त्रिक अधिकार** अधिकारों के बिना जीवन, लोकतन्त्र में अधिकार, भारतीय संविधान में अधिकार, अधिकारों का बढ़ता दायरा।	05
	पुस्तक का नाम—अर्थशास्त्र–I	
अध्याय-1	**पालमपुर गाँव की कहानी** उत्पादन का संगठन, पालमपुर में कृषि, पालमपुर में गैर-कृषि क्रियाएँ	03
अध्याय-2	**संसाधन के रूप में लोग** परिचय, पुरुषों और महिलाओं द्वारा अर्थिक क्रियाकलाप, जनसंख्या की गुणवत्ता—शिक्षा एवं स्वास्थ्य, बेरोजगारी का अर्थ एवं स्वरूप।	05
अध्याय-3	**निर्धनता : एक चुनौती** परिचय, निर्धनता के दो विशिष्ट मामले—शहरी एवं ग्रामीण निर्धनता, सामाजिक वैज्ञानिकों की दृष्टि में निर्धनता, निर्धनता के अनुमान, असुरक्षित समूह, अन्तर्राज्यीय असमानताएँ, वैश्विक निर्धनता परिदृश्य, निर्धनता के कारण, निर्धनता निरोधी उपाय, भावी चुनौतियाँ।	06
अध्याय-4	**भारत में खाद्य सुरक्षा** भारत में खाद्य सुरक्षा से अभिप्राय:, बफर स्टॉक, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, सहकारी समितियों की खाद्य सुरक्षा में भूमिका।	05

नोट : विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

***

आल इन वन—कक्षा-9

विषय-सूची

1. English

Beehive—Prose

1. The Fun They Had 1
2. The Sound of Music
   - I. Evelyn Glennie 11
   - II. Bismillah Khan 16
3. The Little Girl 24
4. A Truly Beautiful Mind 33
5. The Snake and the Mirror 41
6. My Childhood 49
7. Reach for the Top
   - I. Santosh Yadav 60
   - II. Maria Sharapova 66
8. Kathmandu 71
9. If I Were You 79

Beehive—Poetry

1. The Road Not Taken 88
2. Wind 91
3. Rain on the Roof 95
4. The Lake Isle of Innisfree 98
5. A Legend of the Northland 101
6. No Men Are Foreign 105
7. On Killing a Tree 108
8. A Slumber Did My Spirit Seal 112

Moments

1. The Lost Child 114
2. The Adventures of Toto 120
3. Iswaran the Storyteller 125
4. In the Kingdom of Fools 131
5. The Happy Prince 138
6. Weathering the Storm in Ersama 144
7. The Last Leaf 150
8. A House Is Not a Home 155
9. The Beggar 162

Grammar

1. Tenses 168
2. Relative Pronouns 182
3. Determiners 186
4. Prepositions 190

Reading

Unseen Passages 194-202

Writing

1. **Letter Writing (Informal, Formal and E-mail) 202-214**
2. **Short Paragraph 214-225**
3. **Short Writing Task—**
   - I. Dialogue Writing 225
   - II. Story Writing 227

2. हिन्दी

क्षितिज भाग-1

गद्य-खण्ड

1. दो बैलों की कथा 234
2. ल्हासा की ओर 239
3. उपभोक्तावाद की संस्कृति 245
4. साँवले सपनों की याद 250
5. प्रेमचन्द के फटे जूते 254
6. मेरे बचपन के दिन 259

काव्य-खण्ड

7. कबीर (साखियाँ एवं सबद) 264
8. ललद्यद (वाख) 271
9. रसखान (सवैये) 276
10. माखनलाल चतुर्वेदी (कैदी और कोकिला) 281
11. सुमित्रानंदन पंत (ग्राम-श्री) 288
12. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (मेघ आए) 295
13. राजेश जोशी (बच्चे काम पर जा रहे हैं) 301

कृतिका भाग-1 (पूरक पुस्तक)

1. इस जल प्रलय में 306
2. मेरे संग की औरतें 309
3. रीढ़ की हड्डी 313

व्याकरण

1. शब्द-निर्माण (उपसर्ग-प्रत्यय) 316
2. विशेषण (लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव) 322
3. परसर्ग या कारक 'ने' का क्रिया पर प्रभाव 326
4. वाक्य-रचना (सरल और संयुक्त वाक्य) 330
5. पर्यायवाची, विलोम तथा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 333
6. मुहावरे 339

अपठित-बोध

अपठित गद्यांश एवं अपठित काव्यांश 344-351

रचना

निबन्ध-लेखन

1. मेक इन इंडिया अथवा स्वदेशी उद्योग 351
2. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी
   अथवा
   कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव 351
3. समाज में नारी का स्थान
   अथवा
   भारतीय नारी तब और अब
   अथवा
   राष्ट्र के उत्थान में नारी की भूमिका 352
4. कन्या भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या
   अथवा
   कन्या भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 353
5. राजस्थान में बढ़ता जल संकट 353
6. बाल विवाह : एक अभिशाप 354
7. पर्यावरण प्रदूषण 354
8. जनसंख्या की समस्या एवं समाधान 355
9. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व 355
10. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप 356
11. आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी
    अथवा
    सूचना क्रांति के युग में भारत 356
12. मानव के लिए विज्ञान—वरदान या अभिशाप 357
13. जल संरक्षण : हमारा दायित्व
    अथवा
    जल है तो जीवन है 357
14. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है
    अथवा
    विद्यार्थी जीवन में अनुशासन 358
15. जीवन की वह चिरस्मरणीय यात्रा 358

संवाद-लेखन 359-360

पत्र-लेखन

(औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र) 360-364

प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लेखन 364-366

3. संस्कृत

शेमुषी (प्रथमो भागः)

मङ्गलम् 367

1. भारतीवसन्तगीतिः 367
2. स्वर्णकाकः 371
3. गोदोहनम् 377
4. सूक्तिमौक्तिकम् 384
5. भ्रान्तो बालः 390
6. लौहतुला 394
7. सिकतासेतुः 398
8. जटायोः शौर्यम् 403
9. पर्यावरणम् 409
10. वाङ्मनः प्राणस्वरूपम् 412

पाठ्यपुस्तकात् द्वौ श्लोकलेखनम् 416

अपठितावबोधनम् 416-422

(क) 80-100 शब्दपरिमिताः सरलगद्यांशाः 416-420

(ख) 40-50 शब्दपरिमिताः सरलगद्यांशाः 420-422

रचनात्मकं कार्यम्—

(i) संकेताधारित अभिनन्दनपत्रम्/वर्धापनपत्रम्/प्राचार्यं प्रति प्रार्थना-पत्रम् 422-427

(ii) (अ) संकेताधारितः वार्तालापः 427-428

(ब) अनुच्छेद-लेखनम् 429

(iii) संकेताधारिता: चित्रवर्णनम् 429–431
(iv) कथाक्रमसंयोजनम् 431–433
(v) अनुवाद-कार्यम् 433–436
व्याकरणम् **436–485**
(i) सन्धिकार्यम्, (ii) समास-ज्ञानम्, (iii) कारकम्, (iv) प्रत्ययज्ञानम् (v) धातुरूपाणि, (vi) शब्दरूपाणि, (vii) संख्यावाचक शब्दा:, (viii) सर्वनाम शब्द, (ix) उपसर्ग:।

4. विज्ञान

1. हमारे आस-पास के पदार्थ 486
2. क्या हमारे आस-पास के पदार्थ शुद्ध हैं 493
3. परमाणु एवं अणु 500
4. परमाणु की संरचना 508
5. जीवन की मौलिक इकाई 518
6. ऊतक 527
7. गति 537
8. बल तथा गति के नियम 550
9. गुरुत्वाकर्षण 562
10. कार्य तथा ऊर्जा 575
11. ध्वनि 586
12. खाद्य संसाधनों में सुधार 595

5. गणित

1. संख्या पद्धति 606
2. बहुपद 620
3. निर्देशांक ज्यामिति 638
4. दो चरों वाले रैखिक समीकरण 643
5. यूक्लिड की ज्यामिति का परिचय 650
6. रेखाएँ और कोण 656
7. त्रिभुज 666
8. चतुर्भुज 680
9. वृत्त 691
10. हीरोन का सूत्र 706
11. पृष्ठीय क्षेत्रफल और आयतन 715
12. सांख्यिकी 734
परिशिष्ट 1—गणित में उपपत्तियाँ **746**
परिशिष्ट 2—गणितीय निदर्शन का परिचय **750**

6. सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास)
खण्ड-I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ
1. फ्रांसीसी क्रांति 753
2. यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रांति 760
3. नात्सीवाद और हिटलर का उदय 767
खण्ड-II : जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज
4. वन्य समाज और उपनिवेशवाद 775
5. आधुनिक विश्व में चरवाहे 780
मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न **787–788**
समकालीन भारत-1 (भूगोल)
1. भारत-आकार और स्थिति 789
2. भारत का भौतिक स्वरूप 793
3. अपवाह 801
4. जलवायु 807
5. प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणी 815
6. जनसंख्या 822
मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न **827–829**
लोकतान्त्रिक राजनीति-1 (राजनीति विज्ञान)
1. लोकतन्त्र क्या? लोकतन्त्र क्यों? 830
2. संविधान निर्माण 838
3. चुनावी राजनीति 844
4. संस्थाओं का कामकाज 852
5. लोकतान्त्रिक अधिकार 859
अर्थशास्त्र
1. पालमपुर गाँव की कहानी 866
2. संसाधन के रूप में लोग 874
3. निर्धनता : एक चुनौती 880
4. भारत में खाद्य सुरक्षा 886

ENGLISH CLASS-9

BEEHIVE (PROSE)

1. The Fun They Had
[आनन्द जो वे लेते थे]

पढ़ने से पूर्व :

- कहानी जो हम पढ़ेंगे वह भविष्य की ओर संकेत करती है, जब पुस्तकें व विद्यालय जैसा हम उन्हें आज जानते हैं शायद ऐसे ही अस्तित्व में नहीं रहेंगे। बच्चे तब कैसे पढ़ेंगे? निम्न रेखाकृति शायद आपको कुछ विचार दे–

- जोड़े बनाकर, उन तीन चीजों पर परिचर्चा करें जो आप अपने विद्यालय के विषय में सर्वाधिक पसन्द करते हैं और अपने विद्यालय की उन तीन चीजों के विषय में भी जिन्हें आप परिवर्तित करना चाहेंगे। उन्हें लिखिए।
- क्या आपने कभी टेलीविजन (या कम्प्यूटर) के पर्दे पर शब्दों को पढ़ा है? क्या आप परिकल्पना कर सकते हैं जब समस्त पुस्तकें कम्प्यूटर पर होंगी, और कागज पर छपी हुई कोई पुस्तक नहीं होगी? क्या आप ऐसी पुस्तकों को और अधिक पसन्द करेंगे?

कठिन शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद

1. Margie even ..... first time.

कठिन शब्दार्थ : headed (हेडिड) = ऊपर, **turned** (टन्ड) = पल्टे, **crinkly** (क्रिङ्कलि) = सिलवटों वाले, **awfully** (ऑफ्लि) = अत्यधिक, **stood still** (स्टुड स्टिल्) = स्थिर थे, **moving** (मूविङ्) = चलते हुए/गतिमान, **supposed to** (सपोज्ड टु) = अपेक्षित था, **screen** (स्क्रीन्) = पर्दा।

हिन्दी अनुवाद : मार्गी ने उस रात अपनी डायरी में भी लिखा था। पृष्ठ पर ऊपर 17 मई, 2157, उसने लिखा, 'आज टॉमी को एक वास्तविक पुस्तक मिली!'

यह एक बहुत प्राचीन पुस्तक थी। मार्गी के दादाजी ने एक बार कहा था कि जब वह एक छोटा बालक था तो उसके (मार्गी के दादा के) दादाजी ने उसे बताया था कि एक समय था जब सभी कहानियाँ कागज पर छपती थीं।

उन्होंने पन्ने पल्टे, जो पीले व सलवटों वाले थे, और यह अत्यधिक हास्यकर था कि उन शब्दों को पढ़ना जो स्थिर थे बजाय उस तरीके से गतिमान होने के जैसा कि पर्दे पर उनसे अपेक्षित था व आप जानते हैं। और फिर जब उन्होंने पूर्व वाला ही पन्ना पलटकर देखा, तो इस पर वही शब्द थे जो इस पर तब थे जब उन्होंने प्रथम बार इसे पढ़ा था।

2. 'Gee', said Tommy, ... 'School'.

कठिन शब्दार्थ : Gee (जी) = आश्चर्य व्यक्त करने वाला शब्द, **through** (थ्रू) = पढ़कर समाप्त करना, **throw away** (थ्रो अवे) = फेंक देना, **guess** (गेस्) = अनुमान लगाना, **million** (मिल्यन्) = दस लाख, **plenty more** (प्लेन्टि मॉर) = और बहुत-सी, **telebooks** (टेलिबुक्स) = स्क्रीन पर प्रदर्शित की जाने वाली पुस्तकें, **pointed** (पॉइन्टिड) = उत्तर दिया, **attic** (ऐटिक्) = अटारी।

हिन्दी अनुवाद : 'आश्चर्य', टॉमी ने कहा, 'क्या अपव्ययता है। जब आप पुस्तक पढ़कर समाप्त कर लेते हैं, तो आप इसे केवल फेंक देते हैं, ऐसा मैं अनुमान करता हूँ। हमारे टेलिविजन पर्दे पर निश्चित रूप से दसियों लाख पुस्तकें हैं तथा यह और अधिक के लिए भी उपयुक्त है। मैं इन्हें नहीं फेंकूँगा।'

'मेरे साथ भी ऐसा ही है', मार्गी ने कहा। वह ग्यारह वर्ष की थी और इतनी टेलि-पुस्तकें नहीं देखी थीं जितनी टॉमी ने देखी थीं। वह तेरह वर्ष का था।

उसने (मार्गी ने) कहा, 'तुम्हें यह कहाँ से मिली?'

'मेरे घर में।' बिना देखे उसने उत्तर दिया, क्योंकि वह पढ़ने में व्यस्त था। 'अटारी में।'

'यह किसके बारे में है?'

'विद्यालय'।

3. Margie was scornful ..... Inspector.

कठिन शब्दार्थ : scornful (स्कॉन्फ्ल्) = घृणा से भरना, **mechanical** (मकैनिक्ल्) = मशीनी, **worse and worse** (वस् अन्ड् वस्) = बद से बदतर, **until** (अन्टिल्) = जब तक, **shaken** (शेकन्) = हिलाया, **sorrowfully** (सॉरोफलि) = उदासी से, **County** (काउन्टि) = ब्रिटेन में स्थानीय स्वशासन वाला क्षेत्र।

हिन्दी अनुवाद : मार्गी घृणा से भर गई। 'विद्यालय?

विद्यालय के विषय में लिखने वाली क्या बात है? मैं विद्यालय से घृणा करती हूँ।'
मार्गी हमेशा विद्यालय से घृणा करती थी, लेकिन अब उसे इससे पहले से अधिक घृणा हो गई। मशीनी शिक्षक भूगोल में उसे टेस्ट पर टेस्ट दिये जा रहा था और वह बद से बदतर किये जा रही थी जब तक कि उसकी माँ ने उदासी से सिर नहीं हिलाया और काउन्टि इन्स्पेक्टर को नहीं बुला भेजा।

4. He was a..... no time.

कठिन शब्दार्थ : **dials** (डाइअल्ज) = घड़ीनुमा प्लेटें, **wires** (वाइअ(र)ज) = तार, **took apart** (टुक अपाट्) = पुरजे खोल दिये, **hoped** (होप्ट) = आशा की, **put together** (पुट् टगेद(र)) = जोड़ना, **ugly** (अग्लि) = भद्दा, **shown** (शोन) = दिखाये, **slot** (स्लॉट्) = निर्धारित स्थान, **punch code** (पन्च् कोड्) = छेदों की गुप्त भाषा, **calculated** (कैल्क्युलेट्ड) = गणना की।

हिन्दी अनुवाद : वह एक गोल-मटोल लाल मुख वाला छोटा-सा आदमी था और उसके पास डायलों व तारों सहित यन्त्रों का पूरा भरा बॉक्स था। वह मार्गी को देख मुस्कराया और उसे एक सेब दिया, फिर उसके अध्यापक के पुरजे खोल दिये। मार्गी ने आशा की थी कि उसे इसे वापस जोड़ना नहीं आयेगा, लेकिन वह सबकुछ कितनी अच्छी तरह जानता था, और लगभग एक घण्टे के पश्चात् यह पुनः वहाँ था—बड़ा व काला व भद्दा—एक बड़े पर्दे के साथ जिस पर सभी पाठ दिखाये गये थे और प्रश्न पूछे गये थे। वह इतना बुरा नहीं था। मार्गी जिस भाग से सर्वाधिक घृणा करती थी यह वह निर्धारित स्थान था जिसमें उसे अपना होमवर्क व टेस्ट पेपर रखने होते थे। उसे हमेशा उन्हें छेदों की गुप्त भाषा में लिखना पड़ता था जिसे उन्होंने उसे तब सिखाया था जब वह छः वर्ष की थी, और उसके मशीनी शिक्षक ने न के बराबर समय में अंकों की गणना कर डाली।

5. The Inspector had.....about school?"

कठिन शब्दार्थ : **patted** (पैट्ड) = थपथपाया, **fault** (फॉल्ट्) = गलती, **geared** (गिअ(र)ड) = चला, **happen** (हैपन्) = घटित होना, **slowed** (स्लोड) = धीमा कर दिया, **average** (ऐवरिज्) = औसतन, **level** (लेव्ल्) = स्तर, **actually** (ऐक्चुअलि) = वास्तव में, **overall** (ओवर् ऑल्) = सम्पूर्ण, **pattern** (पैट्न्) = नमूना, **progress** (प्रग्रेस्) = प्रगति, **quite** (क्वाइट्) = काफी, **satisfactory** (सैटिस्फैक्टरि) = सन्तोषजनक, **disappointed** (डिसपॉइन्टिड्) = निराश हो गई, **altogether** (ऑलटॅगेद(र)) = पूर्णतया, **blanked out** (ब्लैङ्क्ट आउट्) = सफाया हो गया।

हिन्दी अनुवाद : जब इन्स्पेक्टर ने काम समाप्त कर लिया तब वह मुस्कराया और मार्गी का सिर थपथपाया। उसने अपनी माँ से कहा, 'श्रीमती जोन्स, यह इस छोटी-सी लड़की की गलती नहीं है। मेरा ख्याल है कि भूगोल का भाग थोड़ा तेज चल रहा था। ऐसी चीजें कभी-कभी घटित हो जाती हैं। मैंने इसे एक औसतन दस वर्ष के बच्चे के स्तर तक धीमे कर दिया है। वास्तव में उसकी प्रगति का सम्पूर्ण नमूना काफी सन्तोषजनक है।' और उसने मार्गी का सिर पुनः थपथपाया।
मार्गी निराश थी। वह आशा कर रही थी कि वे अध्यापक को पूर्णतया बाहर निकाल देंगे। एक बार उन्होंने टॉमी के अध्यापक को लगभग एक महीना बाहर निकाले रखा क्योंकि उसके इतिहास के पूरे भाग का सफाया हो गया था। अतः उसने टॉमी से कहा, 'कोई विद्यालय के विषय में क्यों लिखेगा?'

6. Tommy looked.....them questions.

कठिन शब्दार्थ : **superior** (सूपिअरिअ(र)) = गर्व से/श्रेष्ठ, **stupid** (स्ट्यूपिड्) = मूर्ख, **loftily** (लॉफ्टिलि) = गर्व से, **pronouncing** (प्रनाउन्सिंग) = उच्चारण करते हुए, **centuries** (सेन्चरिज) = सैकड़ों वर्ष, **hurt** (हर्ट्) = आहत होना, **for a while** (फॉ(र्) ऐ वाइल्) = कुछ समय के लिए, **anyway** (एनिवे) = जो भी हो, **sure** (शॉ(र्)) = निश्चय ही।

हिन्दी अनुवाद : टॉमी ने उसकी ओर गर्व से देखा। 'क्योंकि यह हमारी तरह का विद्यालय नहीं है, मूर्ख। यह प्राचीन प्रकार का विद्यालय है जो कि सैकड़ों वर्ष पूर्व हुआ करते थे।' उसने गर्व से जोड़ा, शब्द का ठीक से उच्चारण करते हुए, 'सैकड़ों वर्ष पूर्व।'
मार्गी आहत थी। 'अच्छा, मुझे नहीं पता वर्षों पूर्व कैसे विद्यालय होते थे।' उसके कंधे पर से कुछ समय के लिए उसने वह पुस्तक पढ़ी, फिर कहा, 'जो भी हो, उनका अध्यापक भी था।'
'निश्चय ही उनका अध्यापक था, किन्तु यह नियन्त्रित अध्यापक नहीं था। यह एक मानव था।'
'एक मानव? एक मानव अध्यापक कैसे हो सकता है?'
'अच्छा, वह छात्र-छात्राओं को कुछ बातें बताता था और उनको होमवर्क देता था और उनसे प्रश्न पूछता था।'

7. 'A man isn't ..... same age.'

कठिन शब्दार्थ : **smart** (स्माट्) = चतुर, **enough** (इनफ्) = पर्याप्त, **betcha** (बेटचा) = शर्त लगाकर कहना/निश्चय से कहना, **prepared** (प्रिपेअ(र)ड) = तैयार, **dispute** (डिस्प्यूट्) = विवाद, **strange** (स्ट्रेन्ज्) = अजनबी, **screamed** (स्क्रीम्ड) = चीखा, **laughter** (लाफ्ट(र)) = हँसी, **kids** (किड्ज) = बच्चे, **learn** (लर्न्) = सीखना।

हिन्दी कक्षा IX
क्षितिज : भाग 1
गद्य खण्ड

1. दो बैलों की कथा
(प्रेमचन्द)

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. काँजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी?

उत्तर–काँजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी कैद पशुओं की संख्या, उनकी विभिन्न आवश्यकताओं की पड़ताल, जिससे उनके खाने-पीने का इन्तजाम उसके अनुसार किया जा सके, पशुओं के व्यवहार का आकलन तथा सभी कैद पशुओं की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए ली जाती होगी।

प्रश्न 2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर–छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। उसकी सौतेली माँ उसे मारती थी और उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। वह माँ के बिछुड़ने का दर्द जानती थी। इसलिए हीरा-मोती की व्यथा देखकर उसके मन में उनके प्रति प्रेम उमड़ आया, क्योंकि उसे लगा कि वे भी उसी की तरह अभागे हैं।

प्रश्न 3. कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति-विषयक मूल्य उभरकर आए हैं?

उत्तर–प्रस्तुत कहानी में बैलों के माध्यम से अग्रलिखित नीति-विषयक मूल्य उभरकर सामने आये हैं–

(1) सरल-सीधा और अत्यधिक सहनशील नहीं होना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक सीधे इन्सान को 'गधा' कहा जाता है। इसलिए मनुष्य को अपने अधिकारों के प्रति संघर्षरत रहना चाहिए।

(2) मनुष्य को हमेशा स्वामिभक्ति, सहयोग, नि:स्वार्थ परोपकार, मित्रता और नारियों के प्रति सहयोग की भावना रखनी चाहिए।

(3) आजादी पाने के लिए मनुष्य को बड़े से बड़ा कष्ट उठाने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

(4) मनुष्य को नारी जाति का सम्मान करने वाला, धर्म की मर्यादा मानने वाला तथा सच्ची आत्मीयता रखने वाला होना चाहिए।

प्रश्न 4. प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न कर किस नये अर्थ की ओर संकेत किया है?

उत्तर–प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द ने गधे के लिए रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न करके उसे सन्तोषी, सहनशील, सुख-दु:ख में समान रहने वाला, क्रोधरहित एवं स्थिर व्यवहार वाला बताया है। इस आधार पर उसकी तुलना ऋषि-मुनियों के स्वभाव से की है। इस प्रकार कथाकार ने गधे के सहिष्णु, निरापद, सद्गुणी एवं सन्तोषी स्वभाव वाले अर्थ की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 5. किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर–'दो बैलों की कथा' में कुछ घटनाएँ ऐसी हैं, जिनसे हीरा और मोती की गहरी दोस्ती का पता चलता है। यथा–

(1) वे एक-दूसरे को सूँघ कर व चाटकर अपना प्रेम प्रकट करते थे।

(2) दोनों बैलगाड़ी या हल में जोते जाने पर ज्यादा से ज्यादा बोझ स्वयं ढोने का प्रयास करते थे।

(3) मटर के खेत में दोनों मस्त होकर, सींग मिलाकर एक-दूसरे को ढेलने लगे। तब हीरा को क्रोधित देखकर मोती ने उसके साथ कठोर व्यवहार किया और दोस्ती को दुश्मनी में नहीं बदलने दिया।

(4) गया द्वारा हीरा की निर्दयतापूर्वक पिटाई करने पर मोती का क्रोध भड़क उठा और वह हल, जुआ आदि लेकर भाग निकला और उनको तोड़-ताड़कर बराबर कर दिया।

(5) दोनों मित्रों ने सहयोगी रणनीति से सांड का मुकाबला कर उसे परास्त किया।

(6) मटर के खेत में मोती के पकड़े जाने पर हीरा भी उसके पास आ गया। रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया।

(7) काँजीहौस में दीवार गिराने पर जब हीरा की रस्सी नहीं टूटी तो मोती भी अकेले बाहर नहीं गया।

इस तरह के आचरण से दोनों में गहरी दोस्ती दिखाई दी।

प्रश्न 6. "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।"–हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचन्द के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–हीरा के उक्त कथन के माध्यम से प्रेमचन्द का स्त्री-जाति के प्रति सम्मान का भाव व्यक्त हुआ है। भारतीय संस्कृति में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' कथन से नारी को सम्मानित एवं पूज्या माना गया है। हमारे समाज में कुछ लोग स्त्री को केवल भोग्या तथा साधारण जीव मानते हैं, उसका शोषण-उत्पीड़न करते हैं, मारते-पीटते भी हैं, परन्तु प्रेमचन्द का ऐसा दृष्टिकोण नहीं रहा है। उन्होंने स्त्री को समता एवं सम्मान का पात्र बताया है।

प्रश्न 7. किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी सम्बन्धों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है?

उत्तर–कहानी में किसान जीवन वाले समाज में मनुष्य और पशु का घनिष्ठ संबंध बताया गया है। वे एक-दूसरे के सहायक और पूरक रहे हैं। किसान पशुओं को घर का सदस्य मानकर उनसे प्रेम करता है और पशु भी अपने स्वामी के लिए जी-जान देने को तैयार रहते हैं। झूरी हीरा-मोती को घर के सदस्यों की तरह स्नेह करता था। इसीलिए हीरा-मोती दो बार उसकी ससुराल से भाग कर अपने थान पर खड़े हुए थे। उन्हें देखकर वह ही नहीं उसकी पत्नी भी आनन्द से भर उठी थी। इससे पता चलता है कि किसान अपने पशुओं से मानवीय व्यवहार करते हैं।

प्रश्न 8. ''इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे''–मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–इस कथन से ज्ञात होता है कि मोती स्वभाव से उग्र किन्तु परोपकारी, सहयोगी और दयालु बैल है। वह अत्याचार का विरोधी, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति रखने वाला और आजादी का समर्थक है। इसीलिए वह काँजीहौस की दीवार तोड़कर बन्द पड़े पशुओं को आजाद कर देता है। उसे इस बात पर सन्तोष होता है कि अब चाहे कुछ भी हो। इतना तो हो गया कि मेरे प्रयास से नौ-दस प्राणियों की जान बच गयी। अत: वह आशावादी, स्वार्थहीन और साहसी पशु था।

प्रश्न 9. आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

उत्तर–आशय–सामान्य पशु होते हुए भी हीरा और मोती एक-दूसरे के मनोभावों को समझ लेते थे तथा मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। इससे कथाकार का मानना है कि उन दोनों बैलों के पास अवश्य ही कोई गुप्त शक्ति थी जिसके माध्यम से मूक-भाषा में वे एक-दूसरे की मन की भावनाओं को समझ लेते थे। मनुष्य सभी जीवों में श्रेष्ठ है, परन्तु उसके पास ऐसी गुप्त शक्ति का अभाव है, जो बिना बोले ही दूसरों की भावनाओं को स्पष्टतया समझ सके।

(ख) उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शान्त होती, पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

उत्तर–आशय–गया के घर में हीरा-मोती के साथ अत्याचार होता था। गया उन्हें मारता था और खाने के लिए सूखा भूसा देता था। दोनों बैल इसे अपना अपमान समझते थे। सन्ध्या के समय उसी घर की एक छोटी सी बच्ची ने दो रोटियाँ लाकर उन दोनों को खिलायीं। एक-एक रोटी से उनकी भूख क्या शान्त होती, परन्तु छोटी बच्ची के प्रेमपूर्ण व्यवहार को देखकर उन दोनों में एक शक्ति का संचार हो गया, मानो उन्हें अच्छा भोजन मिल गया और उनके हृदय में यह भाव जागा कि यहाँ पर भी किसी सज्जन का वास है।

प्रश्न 10. गया ने हीरा-मोती को दोनों बार सूखा भूसा खाने के लिए दिया क्योंकि–

(क) गया पराये बैलों पर अधिक खर्च नहीं करना चाहता था।

(ख) गरीबी के कारण खली आदि खरीदना उसके बस की बात न थी।

(ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दु:खी था।

(घ) उसे खली आदि सामग्री की जानकारी न थी।

सही उत्तर के आगे (√) का निशान लगाइए।

उत्तर–(ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दु:खी था। (√)

रचना और अभिव्यक्ति–

प्रश्न 11. हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ़ आवाज उठाई, लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट करें।

उत्तर–प्रस्तुत कहानी में हीरा-मोती को स्वतन्त्रता-आन्दोलन के क्रान्तिकारियों के प्रतीक रूप में रखा गया है। इन दोनों ने गया के घर जाने पर मातृभूमि के प्रति अपना प्रेम दर्शाने और अत्याचार-शोषण का विरोध करने में अपनी क्षमता का परिचय दिया। इस संघर्ष में उन्हें वहाँ प्रताड़ना मिली, मार भी खानी पड़ी और भूखा भी रखा गया, फिर भी वे अपने ढंग से उसका विरोध करते रहे। इस तरह गुलामी के बदले आजादी की लालसा में उन्होंने संघर्षरत रहने की अपनी बलवती भावना का परिचय दिया।

प्रश्न 12. क्या आपको लगता है कि यह कहानी आजादी की लड़ाई की ओर संकेत करती है?

उत्तर–अप्रत्यक्ष रूप से यह कहानी अंग्रेजों की दासता से मुक्ति की कहानी है और इसमें हीरा-मोती क्रान्तिकारियों

संस्कृत–कक्षा IX
शेमुषी (प्रथमो भागः)

मङ्गलम्

(1)

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥

अन्वय–यस्यां (भूमौ) समुद्रः, उत सिन्धुः आपः (सन्ति), यस्याम् अन्नं कृष्टयः सं बभूवुः, यस्याम् इदं जिन्वति प्राणदेजत्, सा भूमिः नः पूर्वपेये दधातु।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत मन्त्र हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' के 'मङ्गलम्' से उद्धृत किया गया है। इसमें मातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए हम सभी के लिए आवश्यक खाद्य-पदार्थ प्रदान करने की मंगल-कामना की गई है।

हिन्दी-अनुवाद–जिस (भूमि) में महासागर, नदियाँ और जलाशय (झील, सरोवर आदि) विद्यमान हैं, जिसमें अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ उपजते हैं तथा कृषि, व्यापार आदि करने वाले लोग सामाजिक संगठन बना कर रहते हैं, जिस (भूमि) में ये साँस लेते (प्राणत्) प्राणी चलते-फिरते हैं; वह मातृभूमि हमें प्रथम भोज्य पदार्थ (खाद्य-पेय) प्रदान करे।

(2)

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु॥

अन्वय–यस्याः पृथिव्याः चतस्रः प्रदिशः, यस्याम् अन्नं कृष्टयः सं बभूवुः, या बहुधा प्राणदेजत् बिभर्ति, सा भूमिः नः गोषु अपि अन्ने दधातु।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत मन्त्र हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' के 'मङ्गलम्' से उद्धृत किया गया है। इसमें मातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए हम सभी के लिए आवश्यक खाद्य-पदार्थ प्रदान करने की मंगल-कामना की गई है।

हिन्दी-अनुवाद–जिस भूमि में चार दिशाएँ तथा उपदिशाएँ अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ (फल, शाक आदि) उपजाती हैं; जहाँ कृषि-कार्य करने वाले सामाजिक संगठन बनाकर रहते हैं, जो (भूमि) अनेक प्रकार के प्राणियों (साँस लेने वालों तथा चलने-फिरने वाले जीवों) को धारण करती है, वह मातृभूमि हमें गौ आदि लाभप्रद पशुओं तथा खाद्य-पदार्थों के विषय में सम्पन्न बना दे।

(3)

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती॥

अन्वय–बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं जनं यथा औकसं बिभ्रती ध्रुवा इव अनपस्फुरन्ती धेनुः इव पृथिवी मे द्रविणस्य सहस्रं धारादुहाम्।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत मन्त्र हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' के 'मङ्गलम्' से उद्धृत किया गया है। इसमें मातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए हम सभी के लिए आवश्यक खाद्य-पदार्थ प्रदान करने की मंगल-कामना की गई है।

हिन्दी-अनुवाद–अनेक प्रकार से विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले तथा अनेक धर्मों को मानने वाले जन-समुदाय को, एक ही घर में रहने वाले लोगों के समान, धारण करने वाली तथा कभी नष्ट न होने देने वाली स्थिर-जैसी यह पृथ्वी हमारे लिए धन की सहस्रों धाराओं का उसी प्रकार दोहन करे जैसे कोई गाय बिना किसी बाधा के दूध देती हो।

प्रथमः पाठः
भारतीवसन्तगीतिः
(सरस्वती का वसन्त-गान)

पाठ-परिचय–प्रस्तुत पाठ आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रख्यात कवि **पं. जानकी वल्लभ शास्त्री** की रचना '**काकली**' नामक गीत-संग्रह से संकलित है। इसमें सरस्वती की वन्दना करते हुए कामना की गई है कि हे सरस्वती! ऐसी वीणा बजाओ, जिससे मधुरमञ्जरियों से पीत पंक्तिवाले आम के वृक्ष, कोयल का कूजन, वायु का धीरे-धीरे बहना, अमराइयों में काले भ्रमरों का गुञ्जार और नदियों का (लीला के साथ बहता हुआ) जल, वसन्त ऋतु में मोहक हो उठे। स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखी गयी यह गीतिका एक नवीन चेतना का आवाहन करती है तथा ऐसे वीणास्वर की परिकल्पना करती है जो स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जनसमुदाय को प्रेरित करे।

अन्वय, कठिन-शब्दार्थ, सप्रसंग हिन्दी-अनुवाद/भावार्थ एवं पठितावबोधनम्–

(1) निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्
मृदुं गाय गीतिं ललित-नीति-लीनाम्।
मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः

कलापाः ललित-कोकिला-काकलीनाम्॥ 1॥
निनादय...॥

अन्वय–अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय। ललित-नीति-लीनां गीतिं मृदु गाय। इह वसन्ते मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः सरसाः रसालाः लसन्ति। ललित-कोकिला-काकलीनां कलापाः (विलसन्ति)। अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

कठिन-शब्दार्थ–अये वाणि! = हे सरस्वती!। **निनादय** = बजाओ/गुंजित करो (नितरां वादय)। **ललितनीतिलीनाम्** = सुन्दर नीतियों से युक्त (सुन्दरनीतिसंलग्नाम्)। **गाय** = गाओ (स्तु)। **इह** = यहाँ (अत्र)। **वसन्ते** = वसन्त-काल में। **मञ्जरी** = आम्रपुष्प (आम्रकुसुमम्)। **पिञ्जरीभूतमालाः** = पीले वर्ण से युक्त पंक्तियाँ (पीतपङ्क्तयः)। **रसालाः** = आम के वृक्ष (आम्राः)। **लसन्ति** = सुशोभित हो रही हैं (शोभन्ते)। **कोकिलाकाकलीनां** = कोयलों की आवाज (कोकिलानां ध्वनिः)। **कलापाः** = समूह (समूहाः)।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत गीति (पद्यांश) हमारी संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' (प्रथमो भागः) के 'भारतीवसन्तगीतिः' नामक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के प्रसिद्ध गीत-संग्रह 'काकली' से संकलित किया गया है। इसमें वाणी की देवी सरस्वती की वन्दना करते हुए वसन्तकालीन मनमोहक तथा अद्भुत प्राकृतिक शोभा का वर्णन किया गया है।

हिन्दी-अनुवाद–हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ। सुन्दर नीतियों से युक्त गीत मधुरता से गाओ। इस वसन्त-काल में मधुर आम्र-पुष्पों से पीली बनी हुई सरस आम के वृक्षों की पंक्तियाँ सुशोभित हो रही हैं और उन पर बैठी हुई एवं मधुर ध्वनियाँ करती हुई कोयलों के समूह भी सुशोभित हो रहे हैं। हे सरस्वती! आप नवीन वीणा बजाइए एवं मधुर गीत गाइए।

भावार्थ–भारत देश में वसन्त-ऋतु का अत्यधिक महत्त्व है। इस समय प्राकृतिक शोभा सभी के मन को सहज ही आकर्षित करती है। आम के वृक्षों पर मञ्जरियाँ सुशोभित होती हैं तथा उन पर बैठी हुई कोयल मधुर कूजन से सभी के मन को मोह लेती है। कवि ने यहाँ इसी प्राकृतिक सुषमा का सुन्दर वर्णन करते हुए वाग्देवी सरस्वती से नवीन वीणा बजाकर मधुर गीत सुनाने के लिए प्रार्थना की है।

पठित-अवबोधनम्–

निर्देशः–उपर्युक्तं पद्यांशं पठित्वा एतदाधारित-प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत–

प्रश्नाः–I. एकपदेन उत्तरत–

(i) वाणी कीदृशीं वीणां निनादयतु?
(ii) रसालाः कीदृशाः लसन्ति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) कविः कीदृशीं गीतिं गातुं कथयति?
(ii) वसन्ते केषां कलायाः लसन्ति?

III. भाषिककार्यम्–

(i) 'सरसाः' इति विशेषणस्य पद्यांशे विशेष्यपदं किम्?
(ii) 'पिकाः' इत्यस्य पर्यायपदं पद्यांशात् चित्वा लिखत।

उत्तराणि– I. (i) नवीनाम्।(ii) सरसाः।
II. (i) कविः ललित-नीति-लीनां मृदुं गीतिं गातुं कथयति।
(ii) वसन्ते ललित-कोकिला-काकलीनां कलापाः लसन्ति।
III. (i) रसालाः। (ii) कोकिलाः।

(2) वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम्॥
निनादय...॥

अन्वय–कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे सनीरे समीरे मन्दमन्दं वहति (सति) मधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अलोक्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

कठिन-शब्दार्थ–कलिन्दात्मजायाः = यमुना नदी के (यमुनायाः)। **सवानीरतीरे** = बेंत की लता से युक्त तट पर (वेतसयुक्ते तटे)। **सनीरे** = जल से पूर्ण (सजले)। **मधुमाधवीनां** = मधुर मालती लताओं का (मधुमाधवीलतानाम्)। **नताम्** = झुकी हुई (नतिप्राप्ताम्)।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत गीति हमारी संस्कृत की पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' (प्रथमो भागः) के 'भारतीवसन्तगीतिः' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के प्रसिद्ध गीत-संग्रह 'काकली' से संकलित है। इसमें वाणी की देवी सरस्वती की वन्दना करते हुए यमुना नदी के तट पर झुकी हुई मधुर मालती लताओं की शोभा का चित्रण किया गया है। कवि कहता है कि–

हिन्दी-अनुवाद–बेंत की लताओं से युक्त यमुना नदी के तट पर जल-कणों से युक्त शीतल पवन के धीरे-धीरे बहते हुए तथा मधुर मालती की लताओं को झुकी हुई देखकर हे सरस्वती! आप कोई नवीन वीणा बजाइए।

भावार्थ–यहाँ कवि ने यमुना नदी के तट की वसन्तकालीन प्राकृतिक शोभा का मनोहारी चित्रण किया है। भारतीय संस्कृति के इस मनोहारी वैशिष्ट्य को दर्शाते हुए कवि ने भारतीय लोगों के हृदय में देश-प्रेम की भावना जागृत करने के लिए माता सरस्वती से नवीन वीणा की तान छेड़ने की प्रार्थना की है।

पठित-अवबोधनम्–

प्रश्नाः–I. एकपदेन उत्तरत–

(i) 'कलिन्दात्मजा' का वर्तते?

विज्ञान–कक्षा IX

1. हमारे आस-पास के पदार्थ
(Matter in Our Surroundings)

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ 4

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से कौन से पदार्थ हैं– कुर्सी, वायु, स्नेह, गंध, घृणा, बादाम, विचार, शीत, नींबू पानी, इत्र की सुगंध।

उत्तर–कुर्सी, वायु, बादाम, नींबू पानी, इत्र की सुगंध पदार्थ हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रेक्षण के कारण बताएँ– गर्मा-गर्म खाने की गंध कई मीटर दूर से ही आपके पास पहुँच जाती है, लेकिन ठण्डे खाने की महक लेने के लिए आपको उसके पास जाना पड़ता है।

उत्तर–पदार्थ के कण निरन्तर गतिशील होते हैं तथा तापमान बढ़ने पर कणों की गति बढ़ जाती है। वस्तुत: खाने की गंध या महक हम तक विसरण के माध्यम से पहुँचती है। कणों का विसरण उच्च ताप पर अधिक व निम्न ताप पर कम होता है, इसीलिए गर्मा-गरम (उच्च ताप वाले) खाने की गंध तेजी के साथ कई मीटर दूर से ही हमारे पास पहुँच जाती है लेकिन ठंडे खाने की गंध (महक) लेने के लिए हमें उसके पास जाना पड़ता है।

प्रश्न 3. स्वीमिंग पूल में गोताखोर पानी काट पाता है। इससे पदार्थ का कौनसा गुण प्रेक्षित होता है?

उत्तर–स्वीमिंग पूल में गोताखोर पानी (जल) काट पाता है क्योंकि वहां पानी के कणों के मध्य लगने वाला आकर्षण बल, गोताखोर द्वारा लगाये जाने वाले बल से कम होता है, जिस कारण पानी के कण आसानी से अलग हो जाते हैं।

इससे पदार्थ का यह गुण प्रदर्शित होता है कि पदार्थ सूक्ष्म कणों से बना है।

प्रश्न 4. पदार्थ के कणों की क्या विशेषताएँ होती हैं?

उत्तर–पदार्थ के कणों की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं–

(i) पदार्थ के कणों के मध्य रिक्त स्थान पाया जाता है।

(ii) पदार्थ के कण निरंतर गतिशील होते हैं।

(iii) पदार्थ के कणों के मध्य एक आकर्षण बल होता है।

पृष्ठ 6

प्रश्न 1. किसी तत्व के द्रव्यमान प्रति इकाई आयतन को घनत्व कहते हैं।

(घनत्व = द्रव्यमान/आयतन)

बढ़ते हुए घनत्व के क्रम में निम्नलिखित को व्यवस्थित करें–वायु, चिमनी का धुआँ, शहद, जल, चॉक, रुई और लोहा।

उत्तर–वायु < चिमनी का धुआं < रुई < जल < शहद < चॉक < लोहा।

प्रश्न 2. (a) पदार्थ की विभिन्न अवस्थाओं के गुणों में होने वाले अन्तर को सारणीबद्ध कीजिए।

(b) निम्नलिखित पर टिप्पणी कीजिए– दृढ़ता, संपीड्यता, तरलता, बर्तन में गैस का भरना, आकार, गतिज ऊर्जा एवं घनत्व।

उत्तर–(a) पदार्थ की विभिन्न अवस्थाओं के गुणों में अन्तर निम्न हैं–

गुण	ठोस	द्रव	गैस
1. अणुओं की स्थिति	अणु बहुत पास-पास होते हैं।	अणु बहुत पास-पास नहीं होते हैं।	अणु बहुत दूर-दूर होते हैं।
2. अणुओं का स्थान	अणुओं का स्थान निश्चित होता है।	अणुओं का स्थान निश्चित नहीं होता है।	अणुओं का स्थान निश्चित नहीं होता है।
3. अणुओं की गतिज ऊर्जा	न्यूनतम होती है।	कुछ अधिक होती है।	सर्वाधिक होती है।

4. आकार	निश्चित	अनिश्चित/पात्र का आकार ग्रहण करता है।	अनिश्चित (जिस पात्र में रखी जाती है, उसी का आकार ग्रहण कर लेती है।)
5. आयतन	निश्चित	निश्चित	अनिश्चित (जिस पात्र में रखी जाती है, उसी का आयतन ग्रहण कर लेती है।)
6. तरलता	बहते नहीं हैं।	ऊपर से नीचे की ओर बहते हैं।	सभी दिशाओं में बहती है।
7. घनत्व	सर्वाधिक	कुछ कम	सबसे कम
8. ऊष्मा द्वारा प्रसरण	कम	कुछ अधिक	बहुत अधिक
9. अन्तर आणविक बल	सर्वाधिक	कुछ कम	सबसे कम
10. गलनांक एवं क्वथनांक	इनके गलनांक एवं क्वथनांक कमरे के ताप से अधिक होते हैं।	इनके क्वथनांक कमरे के ताप से अधिक परन्तु गलनांक कमरे के ताप से कम होते हैं।	इनके गलनांक एवं क्वथनांक कमरे के ताप से कम होते हैं।

(b) (i) दृढ़ता–किसी पदार्थ की अपने आकार को बनाए रखने की प्रवृत्ति दृढ़ता कहलाती है। ठोस पदार्थ के कण आपस में अत्यधिक आकर्षण बल द्वारा जुड़े होते हैं जिससे दृढ़ता का गुण प्रदर्शित होता है।

(ii) संपीड्यता–किसी पदार्थ पर दाब डालने पर उसके आयतन में कमी होने की प्रवृत्ति संपीड्यता कहलाती है। द्रव एवं गैसीय पदार्थों के मध्य काफी रिक्त स्थान होता है, जिसके कारण इन्हें दबाया जा सकता है। गैसों को बहुत अधिक संपीडित किया जा सकता है क्योंकि गैसीय पदार्थ के कणों के मध्य रिक्त स्थान बहुत अधिक होता है।

(iii) तरलता–किसी पदार्थ के बहने का गुण तरलता कहलाता है। सभी द्रव तरल होते हैं।

(iv) बर्तन में गैस का भरना–गैसों के कणों के मध्य अत्यधिक रिक्त स्थान होने के कारण ये उच्च दाब पर आसानी से संपीडित हो जाती हैं। इस कारण इन्हें अपेक्षाकृत कम आयतन या छोटे बर्तन में भी अधिक मात्रा में भरा जा सकता है।

(v) आकार–कोई वस्तु जितना स्थान घेरती है, वह उस वस्तु का आकार कहलाता है।

(vi) गतिज ऊर्जा–वस्तुओं में उनके कणों की गति के कारण उत्पन्न ऊर्जा, गतिज ऊर्जा कहलाती है।

(vii) घनत्व–किसी वस्तु के इकाई आयतन में उपस्थित द्रव्यमान को घनत्व कहते हैं। अतः घनत्व = $\frac{\text{द्रव्यमान}}{\text{आयतन}}$।

प्रश्न 3. कारण बताएँ–

(a) गैस पूरी तरह उस बर्तन को भर देती है, जिसमें इसे रखते हैं।

(b) गैस बर्तन की दीवारों पर दबाव डालती है।

(c) लकड़ी की मेज ठोस कहलाती है।

(d) हवा में हम आसानी से अपना हाथ चला सकते हैं, लेकिन एक ठोस लकड़ी के टुकड़े में हाथ चलाने के लिए हमें कराटे में दक्ष होना पड़ेगा।

उत्तर–(a) गैस के कणों के मध्य आकर्षण बल नगण्य होता है, इस कारण इसके कण सभी दिशाओं में गति करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। इसीलिए जब किसी बर्तन में गैस को रखते हैं, तो वह पूरी तरह उस बर्तन को भर देती है।

(b) गैस बर्तन की दीवारों पर दबाव डालती है क्योंकि गैस के कण न्यून आकर्षण बल के कारण सभी दिशाओं में गति करने के लिए स्वतंत्र होते हैं और वे बर्तन की दीवारों से लगातार टकराते रहते हैं, जिससे बर्तन की दीवारों पर दबाव पड़ता है।

(c) लकड़ी के कण अत्यधिक आकर्षण बल से जुड़े होने के कारण पास-पास होते हैं। इस कारण इसका आकार एवं आयतन निश्चित होते हैं, चूँकि ये ठोस पदार्थ के गुण हैं, अतः लकड़ी की मेज ठोस कहलाती है।

(d) हवा में हम आसानी से अपना हाथ चला सकते हैं क्योंकि हवा के कणों के मध्य आकर्षण बल बहुत कम होता है, जिससे हवा के कण बहुत दूर-दूर होते हैं। जबकि लकड़ी के कणों के मध्य अत्यधिक आकर्षण बल होता है, जिसके कारण इसके कण पास-पास होते हैं, इसलिए लकड़ी के टुकड़ों में हाथ चलाने के लिए कराटे में दक्ष होना पड़ेगा।

प्रश्न 4. सामान्यतया ठोस पदार्थों की अपेक्षा द्रवों का घनत्व कम होता है, लेकिन आपने बर्फ के टुकड़े को जल में तैरते हुए देखा होगा। पता लगाइए, ऐसा क्यों होता है?

उत्तर–सामान्यतया ठोस पदार्थों की अपेक्षा द्रवों का घनत्व कम होता है, लेकिन जब जल बर्फ में बदलता है, तो जल के कणों की आकृति बदल जाने के कारण बर्फ का आयतन जल के आयतन से अधिक हो जाता है।

गणित–कक्षा IX

1. संख्या पद्धति

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्नावली 1.1

1. क्या शून्य एक परिमेय संख्या है? क्या इसे आप $\frac{p}{q}$ के रूप में लिख सकते हैं, जहाँ p और q पूर्णांक हैं और $q \neq 0$ है?

हल–हाँ, शून्य एक परिमेय संख्या है तथा इसे $\frac{p}{q}$ के रूप में निम्नानुसार लिखा जा सकता है–

$0 = \frac{0}{1}$ यहाँ $p = 0$ तथा $q = 1$

इस प्रश्न के अनुसार $\frac{p}{q}$ में q का मान शून्य को छोड़कर कोई भी संख्या हो सकती है जैसे $0 = \frac{0}{1}, \frac{0}{2}, \frac{0}{3}, \frac{0}{-1}, \frac{0}{-2}, \frac{0}{-3}$ आदि।

अत: शून्य एक परिमेय संख्या है। **उत्तर**

2. 3 और 4 के बीच में छ: परिमेय संख्याएँ ज्ञात कीजिए।

हल–प्रश्नानुसार माना कि $a = 3$ तथा $b = 4$

अब 3 तथा 4 के मध्य की संख्या

$$= \frac{a+b}{2} = \frac{3+4}{2} = \frac{7}{2}$$

अब 3 तथा $\frac{7}{2}$ के बीच की परिमेय संख्या

$$\frac{a+b}{2} = \frac{3+\frac{7}{2}}{2} = \frac{\frac{6+7}{2}}{2} = \frac{13}{4}$$

$\frac{7}{2}$ तथा 4 के बीच की परिमेय संख्या

$$= \frac{\frac{7}{2}+4}{2} = \frac{\frac{7+8}{2}}{2} = \frac{15}{4}$$

अब $\frac{13}{4}$ तथा $\frac{7}{2}$ के बीच की परिमेय संख्या

$$= \frac{\frac{13}{4}+\frac{7}{2}}{2} = \frac{\frac{13+14}{4}}{2} = \frac{27}{8}$$

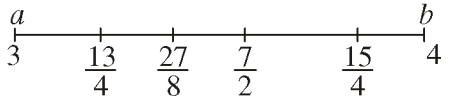

$\frac{7}{2}$ तथा $\frac{15}{4}$ के बीच की परिमेय संख्या

$$\frac{a+b}{2} = \frac{\frac{7}{2}+\frac{15}{4}}{2} = \frac{\frac{14+15}{4}}{2} = \frac{29}{8}$$

अब $\frac{29}{8}$ तथा $\frac{15}{4}$ के बीच की परिमेय संख्या

$$= \frac{\frac{29}{8}+\frac{15}{4}}{2} = \frac{\frac{29+30}{8}}{2} = \frac{59}{16}$$

इस प्रकार 3 व 4 के बीच की छ: परिमेय संख्याएँ क्रमश: $\frac{13}{4}, \frac{27}{8}, \frac{7}{2}, \frac{29}{8}, \frac{59}{16}$ व $\frac{15}{4}$ हैं। **उत्तर**

वैकल्पिक विधि–

हल–3 व 4 के बीच में छ: परिमेय संख्याएँ ज्ञात करने की यह भी विधि है। चूँकि हम छ: संख्याएँ ज्ञात करना चाहते हैं इसलिए $6 + 1 = 7$ को हर के रूप में लेकर 3 और 4 को परिमेय संख्याओं के रूप में लिखते हैं–

अर्थात् $3 = \frac{3\times7}{1\times7} = \frac{21}{7}$ तथा $4 = \frac{4\times7}{1\times7} = \frac{28}{7}$ तब 3 और 4 के बीच छ: परिमेय संख्याएँ क्रमश: $\frac{22}{7}, \frac{23}{7}, \frac{24}{7}, \frac{25}{7}, \frac{26}{7}$ व $\frac{27}{7}$ होंगी। **उत्तर**

3. $\frac{3}{5}$ और $\frac{4}{5}$ के बीच पाँच परिमेय संख्याएँ ज्ञात कीजिए।

हल–प्रश्नानुसार माना कि $a = \frac{3}{5}$ तथा $b = \frac{4}{5}$

किन्हीं भी दो संख्याओं a व b के बीच की परिमेय संख्या = $\frac{a+b}{2}$

अर्थात् $\frac{\frac{3}{5}+\frac{4}{5}}{2}=\frac{\frac{3+4}{5}}{2}=\frac{7}{10}$

अब $\frac{3}{5}$ व $\frac{7}{10}$ के बीच की परिमेय संख्या

$$=\frac{\frac{3}{5}+\frac{7}{10}}{2}=\frac{\frac{6+7}{10}}{2}=\frac{13}{20}$$

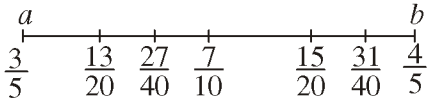

$\frac{7}{10}$ तथा $\frac{4}{5}$ के बीच की परिमेय संख्या

$$=\frac{\frac{7}{10}+\frac{4}{5}}{2}=\frac{\frac{7+8}{10}}{2}=\frac{15}{20}$$

$\frac{13}{20}$ तथा $\frac{7}{10}$ के बीच की परिमेय संख्या

$$=\frac{\frac{13}{20}+\frac{7}{10}}{2}=\frac{\frac{13+14}{20}}{2}=\frac{27}{40}$$

$\frac{15}{20}$ तथा $\frac{4}{5}$ के बीच की परिमेय संख्या

$$=\frac{\frac{15}{20}+\frac{4}{5}}{2}=\frac{\frac{15+16}{20}}{2}=\frac{\frac{31}{20}}{2}=\frac{31}{40}$$

इस प्रकार $\frac{3}{5}$ तथा $\frac{4}{5}$ के बीच की पाँच परिमेय संख्याएँ क्रमशः $\frac{13}{20}, \frac{27}{40}, \frac{7}{10}, \frac{31}{40}$ तथा $\frac{15}{20}$ हैं। **उत्तर**

वैकल्पिक विधि–

हल– $\frac{3}{5}$ और $\frac{4}{5}$ के बीच में पाँच परिमेय संख्याएँ ज्ञात करने की यह भी विधि है। चूँकि हम पाँच संख्याएँ ज्ञात करना चाहते हैं इसलिए दोनों संख्याओं $\frac{3}{5}$ व $\frac{4}{5}$ में 10 का गुणा करने पर प्राप्त संख्या–

$\frac{3}{5}\times\frac{10}{10}=\frac{30}{50}$ तथा $\frac{4}{5}\times\frac{10}{10}=\frac{40}{50}$ हैं।

अब $\frac{3}{5}$ व $\frac{4}{5}$ के बीच में पाँच परिमेय संख्याएँ क्रमशः $\frac{31}{50}, \frac{32}{50}, \frac{33}{50}, \frac{34}{50}$ तथा $\frac{35}{50}$ होंगी। **उत्तर**

4. नीचे दिए गए कथन सत्य हैं या असत्य? कारण के साथ अपने उत्तर दीजिए–

(i) प्रत्येक प्राकृत संख्या एक पूर्ण संख्या होती है।

(ii) प्रत्येक पूर्णांक एक पूर्ण संख्या होती है।

(iii) प्रत्येक परिमेय संख्या एक पूर्ण संख्या होती है।

उत्तर–(i) सत्य है। प्रत्येक प्राकृत संख्या एक पूर्ण संख्या होती है। यह कथन सत्य है क्योंकि पूर्ण संख्याओं के संग्रह में सभी प्राकृत संख्याएँ भी होती हैं, केवल शून्य ही अतिरिक्त होता है।

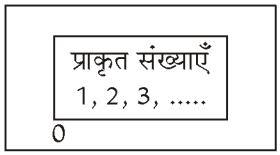

पूर्ण संख्याएँ

अतः यह भी कहा जा सकता है कि प्रत्येक पूर्ण संख्या प्राकृत संख्या नहीं होती लेकिन प्रत्येक प्राकृत संख्या एक पूर्ण संख्या होती है।

(ii) असत्य है। दिया गया कथन कि प्रत्येक पूर्णांक एक पूर्ण संख्या होती है सत्य नहीं है क्योंकि पूर्ण संख्याओं के संग्रह में 0, 1, 2, 3, ... आदि संख्याएँ ही होती हैं ऋणात्मक संख्याएँ जैसे – 3, – 2, – 1 आदि नहीं।

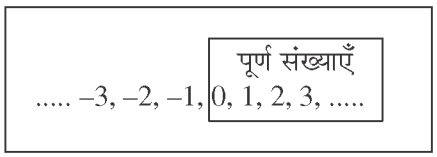

पूर्णांक संख्याएँ

(iii) असत्य है। दिया गया कथन कि प्रत्येक परिमेय संख्या एक पूर्ण संख्या होती है, सत्य नहीं है क्योंकि पूर्ण संख्याएँ परिमेय संख्याओं का ही भाग होती हैं। जैसे $\frac{5}{7}$ एक परिमेय संख्या है किन्तु पूर्ण संख्या नहीं है।

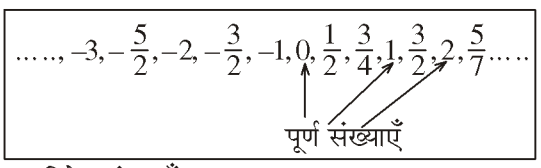

परिमेय संख्याएँ

सामाजिक विज्ञान–कक्षा IX

भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास)

खण्ड I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ

1. फ्रांसीसी क्रान्ति

क्रियाकलाप

पृष्ठ 16

प्रश्न–(i) डेस्मॉलिन्स और रोबेस्प्येर के विचारों की तुलना करें। राज्य शक्ति के प्रयोग से दोनों का क्या तात्पर्य है?

(ii) 'निरंकुशता के विरुद्ध स्वतन्त्रता की लड़ाई' से रोबेस्प्येर का क्या मतलब है?

(iii) डेस्मॉलिन्स स्वतन्त्रता को कैसे देखता है?

उत्तर–(i) डेस्मॉलिन्स तथा रोबेस्प्येर के विचार परस्पर विरोधी हैं। डेस्मॉलिन्स लोकतन्त्र की प्राप्ति के लिए जहाँ संविधानसम्मत तथा शांतिपूर्ण उपाय अपनाने की वकालत करता है वहाँ रोबेस्प्येर लोकतन्त्र की प्राप्ति के लिए आतंक का सहारा लेने की वकालत करता है।

(ii) 'निरंकुशता के विरुद्ध स्वतन्त्रता की लड़ाई' से रोबेस्प्येर का मतलब उन घरेलू एवं बाहरी दुश्मनों का विनाश करना था, जिन्हें वह स्वयं गणतन्त्र का दुश्मन समझता था। जैसे–कुलीन एवं पादरी, अन्य राजनीतिक दलों के सदस्य, उसकी कार्य शैली से असहमति रखने वाले पार्टी सदस्य आदि।

(iii) डेस्मॉलिन्स स्वतन्त्रता को सुख-शांति, विवेक, समानता, न्याय, अधिकारों का घोषणापत्र आदि के रूप में देखता है।

पृष्ठ 20

प्रश्न–ओलम्प दे गूज द्वारा तैयार किये गये घोषणापत्र तथा 'पुरुष एवं नागरिक अधिकार घोषणा पत्र' की तुलना करें।

उत्तर–ओलम्प दे गूज द्वारा तैयार किये गये घोषणापत्र में महिलाओं एवं पुरुषों के मूलभूत अधिकार बताये गये हैं। इसमें महिलाओं को पुरुषों के बराबर का दर्जा दिया गया है। इसके विपरीत 'पुरुष एवं नागरिक अधिकार घोषणापत्र' में केवल पुरुषों के नागरिक अधिकारों की बात की गई है। इसमें महिला अधिकारों की कोई चर्चा नहीं की गई है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. फ्रांस में क्रान्ति की शुरुआत किन परिस्थितियों में हुई?

उत्तर–फ्रांस में क्रान्ति की शुरुआत निम्न परिस्थितियों में हुई–

(1) सामाजिक असमानता–फ्रांस में 1789 की क्रान्ति से पहले व्यापक सामाजिक असमानता थी। अठारहवीं शताब्दी में फ्रांसीसी समाज तीन वर्गों में विभाजित था, जिन्हें एस्टेट कहा जाता था–(i) प्रथम एस्टेट–पादरी वर्ग (ii) द्वितीय एस्टेट–सामंत अथवा कुलीन वर्ग (iii) तृतीय एस्टेट–सामान्य लोग

पहले दो वर्ग कुल जनसंख्या का एक बहुत छोटा-सा हिस्सा थे परन्तु इन्हीं लोगों ने राष्ट्र की राजनैतिक तथा आर्थिक व्यवस्था को नियंत्रित किया हुआ था। उन्हें अनेक विशेषाधिकार तथा सुविधाएँ प्राप्त थीं। तीसरे एस्टेट के लोगों को कोई भी राजनैतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे।

(2) अन्यायपूर्ण कर–राजदरबार की शान-शौकत एवं कुलीन वर्ग के व्यक्तियों की विलासप्रियता के कारण जनता पर अनेक प्रकार के कर लगाये जाते थे। लेकिन प्रथम दो एस्टेट के लोगों को राज्य को दिए जाने वाले करों से छूट थी। तीसरे एस्टेट के लोगों को सभी कर देने पड़ते थे और उनकी वसूली निर्दयतापूर्वक की जाती थी। इससे आम जनता की आर्थिक दशा दयनीय थी।

(3) मध्य वर्ग का उदय–फ्रांस में क्रांति की शुरुआत से पहले तीसरे एस्टेट से एक नये सामाजिक समूह का उदय हुआ, जो मध्य वर्ग कहलाया। यह व्यापारियों, बैंकरों, निर्माताओं, विद्वानों आदि का वर्ग था। मध्य वर्ग के लोग ही क्रांति के नेता बने।

(4) दार्शनिकों तथा लेखकों के विचारों का प्रभाव–लॉक, मोंतेस्क्यू, रूसो, वॉल्तेयर तथा मिराब्यो जैसे अनेक दार्शनिक थे, जिन्होंने व्यवस्था में फैली बुराइयों का पर्दाफाश किया। उन्होंने लोगों को स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व की भावनाओं से प्रेरित किया। इससे भी क्रांति को बल मिला।

(5) जीने का संघर्ष–फ्रांस की जनसंख्या 1715 में लगभग 2.3 करोड़ से बढ़कर 1789 में 2.8 करोड़ हो गई। इससे खाद्यान्नों की माँग में तेजी से वृद्धि हुई। अनाज का उत्पादन माँग के अनुकूल न बढ़ सका। इसलिए बहुसंख्यकों के प्रमुख भोजन–पावरोटी–की कीमत तेजी से बढ़ी परन्तु मजदूरी बढ़ती कीमतों के अनुरूप नहीं बढ़ी। इससे अमीरों–गरीबों के बीच की खाई बढ़ती जा रही थी तथा जीने का संघर्ष उत्पन्न हो रहा था।

(6) स्वेच्छाचारी और निरंकुश शासन–फ्रांस के शासक स्वेच्छाचारी और निरंकुश थे। वे राजा के दैवी और निरंकुश अधिकारों के सिद्धान्त में विश्वास करते थे तथा प्रजा के सुख–दु:ख की उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। वे विलासिता के कार्यों पर धन को मनमाने तरीके से व्यय करते थे।

(7) तात्कालिक कारण–एस्टेट्स जेनराल की बैठक–फ्रांसीसी सम्राट लुई सोलहवें ने 5 मई, 1789 को नये करों के प्रस्ताव के अनुमोदन के लिए एस्टेट्स जेनराल की बैठक बुलाई। एस्टेट्स जेनराल एक राजनीतिक संस्था थी जिसमें तीनों एस्टेट्स अपने–अपने प्रतिनिधि भेजते थे। एस्टेट्स जेनराल के नियमों के अनुसार प्रत्येक वर्ग को एक मत देने का अधिकार था। लेकिन इसमें तीसरे एस्टेट के प्रतिनिधियों ने मांग रखी कि इस बार पूरी सभा द्वारा मतदान कराया जाये तथा जिसमें प्रत्येक सदस्य को एक मत देने का अधिकार हो। सम्राट ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया तथा यहीं से फ्रांसीसी क्रांति का सूत्रपात हुआ।

इस प्रकार फ्रांस की जनता की दयनीय आर्थिक स्थिति, सामाजिक असमानता, निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी शासन, दार्शनिकों तथा विद्वानों का प्रभाव तथा एस्टेट्स जेनराल की बैठक में तीसरे एस्टेट के प्रतिनिधियों की माँगों को अस्वीकार करना आदि परिस्थितियों में फ्रांस में क्रांति हुई।

प्रश्न 2. फ्रांसीसी समाज के किन तबकों को क्रांति का फायदा मिला? कौनसे समूह सत्ता छोड़ने के लिए मजबूर हो गये? क्रांति के नतीजों से समाज के किन समूहों को निराशा हुई होगी?

उत्तर–(1) फ्रांसीसी समाज के वे तबके जिन्हें क्रांति से लाभ हुआ–फ्रांसीसी समाज के तीसरे एस्टेट के लोगों को क्रांति से सबसे अधिक लाभ हुआ। इन वर्गों में किसान, श्रमिक, अदालती कर्मचारी, वकील, अध्यापक, डॉक्टर तथा व्यापारी आदि शामिल थे। पहले उन्हें सब प्रकार के कर देने पड़ते थे तथा उन्हें हर कदम पर सामन्तों तथा पादरियों द्वारा अपमानित किया जाता था परन्तु क्रांति के बाद समाज के ऊपरी वर्गों द्वारा उनके साथ ठीक व्यवहार किया जाने लगा। तीसरे एस्टेट के लोगों में भी अमीरों को सर्वाधिक लाभ हुआ। पहले उन्हें ही राजनैतिक अधिकार दिये गये। बाद में 21 वर्ष वाले सभी पुरुषों को मतदान का अधिकार दिया गया। लेकिन जैकोबिन सरकार के पतन के बाद सम्पत्तिहीन तबके को पुन: मताधिकार से वंचित कर दिया गया।

(2) वे समूह जो सत्ता छोड़ने को मजबूर हुए–क्रांति से पहले सत्ता प्रथम एस्टेट तथा द्वितीय एस्टेट के लोगों के हाथ में थी। इनमें पादरी तथा कुलीन वर्ग आता था। अत: पादरी समूह तथा कुलीन समूह के लोग सत्ता छोड़ने को मजबूर हुए। इनके विशेषाधिकार समाप्त हो गये, सामंती व्यवस्था का उन्मूलन हो गया तथा चर्च के स्वामित्व वाली भूमि जब्त कर ली गई।

(3) क्रांति के नतीजों से निराश समूह–क्रांति के नतीजों से सर्वप्रथम वे समूह निराश हुए जिन्हें पहले विशेषाधिकार प्राप्त थे किन्तु अब छीन लिये गये थे। इनमें पादरी तथा कुलीन लोग शामिल थे। महिलाएँ भी क्रांति के नतीजों से निराश हुईं क्योंकि इससे उन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं हुए। दास भी इसके नतीजों से निराश हुए। यद्यपि थोड़े समय (10 वर्ष) के लिए दास प्रथा को खत्म कर दिया गया था। दस वर्ष बाद नेपोलियन ने दास–प्रथा पुन: शुरू कर दी। सम्पत्तिहीन तबका भी क्रांति के नतीजों से निराश हुआ। उन्हें कोई राजनीतिक अधिकार नहीं मिले।

प्रश्न 3. उन्नीसवीं और बीसवीं सदी की दुनिया के लिए फ्रांसीसी क्रांति कौनसी विरासत छोड़ गई?

उत्तर–उन्नीसवीं और बीसवीं सदी की दुनिया के लिए फ्रांसीसी क्रांति अनेक विरासतें छोड़ गई। इनमें मुख्य निम्न हैं–

(1) सामन्तवाद का अन्त–फ्रांसीसी क्रांति ने फ्रांस में सामन्तवाद का उन्मूलन कर दिया। इससे यूरोप तथा शेष दुनिया में भी सामन्तवाद के विरुद्ध वातावरण बना तथा सामन्तवाद का अन्त हुआ। सामाजिक मान्यतायें बदलीं तथा आर्थिक ढाँचे में आश्चर्यजनक परिवर्तन किये गये।

(2) स्वतन्त्रता, समानता और भाईचारे की भावनाओं का विकास–फ्रांसीसी क्रांति के बाद 19वीं सदी में यूरोप के हर भाग में 'स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व' का नारा गूँजा तथा एक के बाद एक अनेक क्रांतियों की शृंखला बनी।

(3) जन कल्याण की धारणा का विकास–इस क्रांति से मार्गदर्शन प्राप्त करके अन्य देशों के शासक वर्ग ने अपनी जनता का अधिक से अधिक कल्याण करने का प्रयत्न किया।